भ्रान्तो बालः

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» सुभाषित का भावसाम्य–संगति और दोषगुण

प्रश्न 1 (आसान). 'संगति से ही दोष-गुण बनते हैं'–यह भाव सुभाषित की किस पंक्ति से जुड़ा है?
उत्तर – फ्संसर्गजाः दोषगुणाः भवन्ति

प्रश्न 2 (आसान). सुभाषित में मित्रता को किस चीज़ जैसा बताया है?
उत्तर – छाया जैसा

प्रश्न 3 (मध्यम). दुष्ट मित्रता और सज्जन मित्रता–दोनों का असर एक जैसा क्यों नहीं होता?
उत्तर – क्योंकि सुभाषित के अनुसार दोनों मित्रताओं से दोष/गुण का सहचर प्रभाव अलग दिशा में होता है–दुष्ट-संगति का स्वरूप अलग और सज्जन-संगति का स्वरूप अलग।

प्रश्न 4 (कठिन). कहानी 'भ्रान्तो बालः' में इस सुभाषित के भावसाम्य को लगाकर बताओ कि 'साथ' का रोल क्यों इतना बड़ा है?
उत्तर – क्योंकि बालक की दिनचर्या/रुचि पर उसके साथियों की संगति असर डालती है। जो दोस्त अपने कार्य में लगे होते हैं, उनके साथ रहने से पढ़ाई/उपयुक्त कार्य की आदत बढ़ती है; इसके उलट संगति मिलने पर तन्द्रा/भ्रम जैसे दोष बढ़ सकते हैं।

» मैत्री का भेद–पहला चरण और दूसरा चरण

प्रश्न 5 (आसान). दुष्ट मित्रता के लिए वाक्यांश क्या है?
उत्तर – आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण

प्रश्न 6 (आसान). सज्जन मित्रता के लिए वाक्यांश क्या है?
उत्तर – लघ्वी पुरा वृ(िमती च पश्चात्

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर मित्रता पहले आकर्षक लगे और समय के साथ घटती/बिगड़ती जाए, तो वह किस चरण के समान होगी?
उत्तर – दुष्ट मित्रता–'आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण' जैसा

प्रश्न 8 (कठिन). अगर किसी की संगति शुरू में ज्यादा असर न दिखाए, लेकिन कुछ समय बाद पढ़ाई/आचरण सुधरता जाए, तो कौन-सा भेद होगा और क्यों?
उत्तर – सज्जन मित्रता–क्योंकि शुरुआत 'लघ्वी' है और बाद में असर 'वृद्धि/वृ(िमती' की तरह बढ़ता है ('पश्चात्')।

» भ्रान्तो बालः की समस्या–क्रीड़ाप्रवृत्ति और तन्द्रा

प्रश्न 9 (आसान). भ्रान्तो बालः की रुचि किसमें अधिक थी–स्वाध्याय में या क्रीड़ा में?
उत्तर – क्रीड़ा में (स्वाध्यायापेक्षया क्रीडने अधिका रुचिः)।

प्रश्न 10 (आसान). उसके साथी उसके साथ क्यों नहीं खेलते थे?
उत्तर – क्योंकि वे अपने-अपने कर्म में संलग्न थे।

प्रश्न 11 (मध्यम). तन्द्रालुः बालः अकेला होकर क्या सोचता है और क्या करता है?
उत्तर – वह सोचता है कि "स एव रिक्तः सन् इतस्ततः भ्रमति" (मैं खाली हूँ, इसलिए इधर-उधर भटकता हूँ) और लज्जा के कारण एकाकी घूमता है।

प्रश्न 12 (कठिन). भ्रान्तो बालः के भटकाव के कारणों को तीन बिंदुओं में लिखो: (i) रुचि (ii) साथी (iii) मन की स्थिति/क्रिया।

उत्तर – (i) स्वाध्यायापेक्षया क्रीडने अधिक रुचि। (ii) साथी स्व-स्व कर्म में लगे थे, इसलिए साथ नहीं मिल पाया। (iii) तन्द्रालु/आलसी व लज्जाग्रस्त होकर वह अकेला "रिक्त हूँ" सोचकर इधर-उधर भ्रमण करता है।

» पाठशालामार्ग–तन्द्रालु बालक का निर्णय परिवर्तन

प्रश्न 13 (आसान). तन्द्रालु बालक सबसे पहले किस तरफ चला गया–पाठशाला की तरफ या क्रीड़ा की तरफ?

उत्तर – वह क्रीड़ा/उद्यान की तरफ चला गया।

प्रश्न 14 (आसान). उसके 'भ्रम' की मुख्य सोच क्या थी?

उत्तर – उसे लगा कि सब अपने-अपने कार्य में निमग्न हैं, इसलिए वह भटकने लगा।

प्रश्न 15 (मध्यम). कारण-परक निष्कर्ष में 'बोध' का मतलब क्या लिखना चाहिए?

उत्तर – यह लिखना चाहिए कि उसे समझ आया कि सब स्वकार्य में लगे हैं और मेरा कर्तव्य भी वही है जिससे मेरा समय सार्थक हो।

प्रश्न 16 (कठिन). एक 5-वाक्य का कारण-परक उत्तर लिखो: 'तन्द्रा भ्रम बोध निर्णय परिवर्तन' क्रम से।

उत्तर – तन्द्रा और लज्जा से बालक अकेला पड़ गया। फिर उसने सोचा कि सभी अपने-अपने काम में लगे हैं, इसलिए वह इधर-उधर भ्रमित हुआ। इस भ्रम से उसे 'रिक्त' महसूस होकर समय व्यर्थ जाने लगा। बाद में उसे बोध हुआ कि सब अपने स्वकार्य में लगे हैं, अतः मेरा भी कर्तव्य स्वकार्य करना है। इसलिए वह पाठशालामें लौटकर अध्ययन में लग गया।

» उपदेशात्मक घटनाएँ–मधुकर, चटक और श्वान

प्रश्न 17 (आसान). मधुकर ने बालक को खेल के लिए क्यों नहीं माना?

उत्तर – क्योंकि वह मधुसंग्रह में व्यग्र था।

प्रश्न 18 (आसान). चटक को तिनका छोड़कर स्वादिष्ट भोजन लेने का प्रस्ताव मिला। फिर भी वह क्यों नहीं गया?

उत्तर – क्योंकि वह अपने काम/व्यवहार में लगा रहा, लोभ से नहीं टला।

प्रश्न 19 (मध्यम). श्वान ने 'थोड़ा-सा भी' काम से भ्रष्ट होने से इनकार क्यों किया?

उत्तर – क्योंकि वह स्वामि के घर की रक्षा के काम में नियुक्त था और जिम्मेदारी के कारण नहीं हट सकता था।

प्रश्न 20 (कठिन). तीनों घटनाओं का केंद्रीय उपदेश एक वाक्य में लिखो–और यह बालक की पहले वाली गलत सोच से कैसे जुड़ता है?

उत्तर – केंद्रीय उपदेश: हर व्यक्ति/प्राणी अपने-अपने कर्तव्य में लगा होता है, इसलिए मनोरंजन के लिए कर्तव्य नहीं छोड़ना चाहिए। यह बालक की गलत सोच ("सब अपने काम में मग्न हैं, मैं अकेला/रिक्त क्यों महसूस करूँ?") को सही निर्णय में बदलता है कि अब उसे भी पढ़ाई में लगना है।

» मधुकर का वचन–कर्तव्य-पालन की प्रेरणा

प्रश्न 21 (आसान). मधुकर ने खेलने के लिए आने से मना क्यों किया?

उत्तर – क्योंकि वह मधुसंग्रह में व्यग्र था–"स्वयं हि मधुसंग्रहव्यग्राय्".

प्रश्न 22 (आसान). मधुकर का दूसरा तर्क क्या था?

उत्तर – रक्षा-कर्तव्य के कारण उसे थोड़ा-सा भी चूकना नहीं चाहिए–"रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि".

प्रश्न 23 (मध्यम). मधुकर का वचन कर्तव्य-पालन की प्रेरणा कैसे देता है? (2-3 बिंदु लिखो)

उत्तर – वह (1) अपने काम को प्राथमिकता देता है (मधुसंग्रह), (2) जिम्मेदारी/रक्षा-नियोग के कारण विचलित नहीं होता, (3) दिखाता है कि कर्तव्य छोड़ना ठीक नहीं; इसी से बालक सीखकर पढ़ाई में लग जाता है।

प्रश्न 24 (कठिन). कथा के नैतिक निष्कर्ष के साथ जोड़कर उत्तर लिखो: बालक का 'समय सार्थक' होना कैसे सिद्ध हुआ?
उत्तर – बालक ने खेल के लोभ से समय गंवाया, फिर मधुकर और श्वान की तरह यह समझा कि हर व्यक्ति अपने-अपने कर्तव्य में लगा रहता है। मधुकर का "मधुसंग्रहव्यग्र" और "रक्षानियोग..." वाला वचन दिखाता है कि जिम्मेदारी हो तो मन भटके नहीं। इसलिए बालक निर्णय लेता है कि अब वह भी अपने उचित कर्तव्य (पाठशाला/विद्या) में लगेगा और अध्ययन से प्रसिद्धि/सम्पद पाता है—यही 'समय सार्थक' होना है।

» तसिल् प्रत्यय से स्थान/सम्बन्धवाचक रूप—वितत:

प्रश्न 25 (आसान). सागर से 'तसिल्' लगाकर रूप बनाओ।
उत्तर – सागरत:

प्रश्न 26 (आसान). प्रयाग से 'तसिल्' लगाकर रूप बनाओ।
उत्तर – प्रयागत:

प्रश्न 27 (मध्यम). देहली से 'तसिल्' लगाकर रूप बनाओ।
उत्तर – देहलीत:

प्रश्न 28 (कठिन). 'वृत्त' शब्द में 'तसिल्' लगाने पर बनने वाला रूप लिखो। (त: शेष नियम लगाना है)
उत्तर – वृत्तत:

» उपसर्ग—क्रिया के पूर्व जुड़ने वाले प्र/परादि

प्रश्न 29 (आसान). 'प्र' या 'पर' जैसे शब्द अगर धातु के पहले जुड़ें तो उन्हें क्या कहते हैं?
उत्तर – उपसर्ग

प्रश्न 30 (आसान). उपसर्ग किसके पूर्व जुड़ते हैं?
उत्तर – क्रिया/धातु के पूर्व

प्रश्न 31 (मध्यम). 'उप' उपसर्ग को 'हृ' धातु के साथ जोड़ने पर कौन-सा रूप बनता है, और अर्थ क्या होता है?
उत्तर – रूप: 'उपहरति'; अर्थ: 'भेंट देना'

प्रश्न 32 (कठिन). अगर कोई बच्चा कहे 'उपसर्ग कहीं भी जोड़ दो, अर्थ बदल जाएगा', तो तुम कैसे समझाओगे?
उत्तर – उपसर्ग वही है जो धातु/क्रिया के पूर्व जुड़ता है; सही स्थान पर योग करने से रूप और अर्थ बदलते हैं, बिना नियम के नहीं।

» स्त्री प्रत्यय—स्त्रीलिङ्ग में रूपान्तरण

प्रश्न 33 (आसान). 'बाल' का स्त्रीलिङ्ग रूप क्या होगा?
उत्तर – बाला

प्रश्न 34 (आसान). 'लघु' का स्त्रीलिङ्ग रूप क्या होगा?
उत्तर – लघ्वी

प्रश्न 35 (मध्यम). दिए गए प्रत्ययों में: 'टाप्' किस पुरुष शब्द के साथ जोड़कर 'बाला' बनता है?
उत्तर – बाल के साथ

प्रश्न 36 (कठिन). स्त्रीलिङ्ग रूप में रूपान्तरण करो: 'गुरु' के लिए कौन सा प्रत्यय (टाप्/ङीप्) लगता है और परिणाम क्या होगा?
उत्तर – ङीप् लगता है; परिणाम 'गुर्वी' होगा।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लो एक बच्चा पहले पढ़ाई करता था, पर उसके दोस्त हर दिन समय खेल में बर्बाद करते हैं। सुभाषित के भावसाम्य–संगति और दोषगुण–के अनुसार बताओ कि बच्चे के दोष/गुण में क्या बदलाव होगा और क्यों?

› सुभाषित के अनुसार संगति से दोषगुण उत्पन्न होते हैं–यह सिद्धांत याद रखो
› खेल में समय बर्बाद करने वाली संगति बच्चे के व्यवहार को उसी तरफ मोड़ती है
› इसलिए उसकी अच्छी आदत (पढ़ाई) धीरे-धीरे कम होकर दोष (आलस्य/तन्द्रा) बढ़ने लगता है
› कारण स्पष्ट है: साथ के लोगों का असर दिन-रात चलता रहता है, छाया जैसा

उत्तर – बच्चे की पढ़ाई वाली अच्छी आदत घटेगी और आलस्य/समय बर्बाद करने वाला दोष बढ़ेगा, क्योंकि संगति से ही दोष और गुण का सहचर प्रभाव बनता है–मित्रता छाया की तरह असर करती रहती है।

उदाहरण 2. मान लो रवि के दो दोस्त हैं। दोस्त 1 पहली हफ्ते में रवि को बहुत "रोमांचक" चीज़ें करने को कहते हैं, लेकिन 2-3 हफ्ते बाद रवि की पढ़ाई घटती है और वह धीरे-धीरे निराश/लापरवाह होने लगता है। दोस्त 2 शुरुआत में रवि को ज्यादा शोर नहीं मचाता, बस रोज़ थोड़ा सही मार्ग दिखाता है; कुछ समय बाद रवि की आदतें सुधरती हैं और उसकी पढ़ाई व आत्मविश्वास बढ़ता है। बताओ दोनों मित्रताओं में कौन-सा चरण लागू होगा।

› दोनों केस में शुरुआत और बाद के असर को अलग-अलग देखो।
› दोस्त 1 में शुरू भारी आकर्षण है, पर बाद में असर घटता/नुकसान दिखता है–इसलिए 'आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण'।
› दोस्त 2 में शुरू हल्का मार्गदर्शन है, पर बाद में सुधार बढ़ता है–इसलिए 'लघ्वी पुरा वृ(िमती च पश्चात्'।

उत्तर – दोस्त 1 की मित्रता–दुष्ट मित्रता का पहला चरण ('आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण')। दोस्त 2 की मित्रता–सज्जन मित्रता का दूसरा चरण ('लघ्वी पुरा वृ(िमती च पश्चात्')।

उदाहरण 3. भ्रान्तो बालः की समस्या को घटना-क्रम से जोड़कर लिखो: (1) उसकी रुचि किसमें अधिक है? (2) साथी क्या करते हैं? (3) अकेले होने पर वह क्या करता/सोचता है? (4) अंत में उसे क्या समझ आता है?

› पाठ अनुसार: उसकी रुचि स्वाध्याय की अपेक्षा क्रीड़ा में अधिक है।
› साथी अपने-अपने कार्यों में लगे हैं, इसलिए वे उसके साथ नहीं खेलते।
› परिणाम: वह अकेला हो जाता है, तन्द्रालु होकर लज्जा से बचता है और इधर-उधर भटकता है।
› उसके मन में विचार आता है–'स एव रिक्तः... इतस्ततः भ्रमति'।
› कालान्तरे बोध: उसे समझ आता है कि सब अपने-अपने स्वकार्य में लगे हैं; अब उसे भी वही करना चाहिए ताकि उसका समय सार्थक हो।

उत्तर – भ्रान्तो बालः की समस्या यह है कि उसकी रुचि स्वाध्याय से अधिक क्रीड़ा में है। उसके साथी अपने-अपने काम में लगे होने से साथ नहीं देते, इसलिए वह अकेला होकर तन्द्रालु/आलसी बन जाता है, लज्जा के कारण उनकी दृष्टि से बचता है और "मैं रिक्त हूँ" सोचकर इधर-उधर भ्रमण करता है। बाद में उसे बोध होता है कि सभी अपने-अपने कार्य कर रहे हैं, अतः उसे भी अपने कर्तव्य में लगना चाहिए ताकि समय सार्थक बने।

उदाहरण 4. प्रश्न: तन्द्रालु बालक का निर्णय परिवर्तन कैसे हुआ? कारण-परक निष्कर्ष लिखिए। (उत्तर 5-7 वाक्यों में)

› शुरुआत लिखो: तन्द्रा/लज्जा के कारण वह अकेला पड़ गया और क्रीड़ा/उद्यान की तरफ चला गया।
› उसकी सोच लिखो: उसे लगा सभी अपने-अपने कार्य में निमग्न हैं, इसलिए वह इधर-उधर भ्रमित होने लगा।
› प्रभाव लिखो: 'रिक्त' महसूस होने से उसका मन भटकता रहा और समय व्यर्थ होने लगा।
› बोध लिखो: उसे समझ आया कि सब स्वकार्य में लगे हैं।
› निर्णय लिखो: इसलिए उसने सोचा कि मेरा भी कर्तव्य वही है जिससे मेरा काल सार्थक हो।
› अंत लिखो: वह पाठशालागमन करके फिर अध्ययन में लग गया।

उत्तर – तन्द्रालु बालक लज्जा और तन्द्रा के कारण साथियों से दूर हो गया और क्रीड़ा/उद्यान की ओर चला गया। तब उसे यह भ्रम हुआ कि उसके मित्र अपने-अपने कार्यों में लगे हैं, इसलिए वह भी इधर-उधर भटकने लगा। इस कारण उसे 'रिक्तता' का अनुभव हुआ और उसका समय व्यर्थ चला गया। कुछ समय बाद उसे बोध हुआ कि सब लोग अपने-अपने स्वकार्य में लगे हैं। तब उसने यह निर्णय लिया कि उसका भी कर्तव्य वही है, जिससे उसका समय सार्थक हो। अंततः वह पाठशालामें लौटकर अध्ययन में लग गया।

उदाहरण 5. बालक ने मधुकर, चटक और श्वान–तीनों को खेल के लिए बुलाया, पर उन्होंने अपने-अपने कारणों से मना किया। बताओ: प्रत्येक के 'काम में व्यस्त' होने की वजह क्या थी और इससे बालक को क्या सीख मिली?

› मधुकर की वजह पहचानो: वह मधु-संग्रह में व्यग्र था।

› चटक की वजह समझो: उसने लोभ/प्रलोभन में आकर अपना काम नहीं छोड़ा।

› श्वान की वजह समझो: वह स्वामि की रक्षा-ड्यूटी के कारण काम से नहीं हट सकता था।

› तीनों से सामान्य सीख निकालो: मनोरंजन के लिए अपना कर्तव्य नहीं छोड़ना चाहिए।

› इससे बालक का निष्कर्ष लिखो: अब वह पढ़ाई/अपने उचित कार्य में लौटता है।

उत्तर – मधुकर मधु-संग्रह में व्यस्त था, चटक लोभ से नहीं टला और अपने कार्य में लगा रहा, तथा श्वान स्वामि की रक्षा-ड्यूटी के कारण काम से नहीं हट सकता था। इन तीनों घटनाओं से बालक ने सीख ली कि हर कोई अपने-अपने कर्तव्य में लगा रहता है, इसलिए उसे भी मनोरंजन की बजाय अपने उचित कार्य–पढ़ाई–में समय लगाना चाहिए।

उदाहरण 6. मधुकर के वचन से "कर्तव्य-पालन की प्रेरणा" कैसे मिलती है? कथा के नैतिक निष्कर्ष से जोड़कर संस्कृत/हिन्दी में उत्तर लिखो।

› मधुकर के पहले तर्क को लिखो: वह मधु-संग्रह में व्यग्र है ("स्वयं हि मधुसंग्रहव्यग्राय्").

› दूसरा तर्क लिखो: रक्षा-नियोग के कारण उसे थोड़ा भी विचलित/भ्रष्ट नहीं होना चाहिए ("रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि").

› स्पष्ट करो कि यह तर्क जिम्मेदारी दिखाता है–कर्तव्य छोड़ने से नुकसान हो सकता है।

› कथा के नैतिक निष्कर्ष से जोड़ो: बालक समझता है कि समय व्यर्थ नहीं; वह पाठशाला जाकर विद्याव्यसनी बनता है।

उत्तर – मधुकर कहता है कि वह स्वयं मधु-संग्रह में व्यग्र है–इसलिए खेल-बुलावे से वह विचलित नहीं होता ("स्वयं हि मधुसंग्रहव्यग्राय्"). साथ ही उसका स्पष्ट कर्तव्य-तर्क है कि स्वामी की रक्षा-नियोग व्यवस्था के कारण उसे थोड़ा-सा भी भ्रष्ट/चूकना नहीं चाहिए ("रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि"). इस प्रकार उसका वचन दिखाता है कि जिम्मेदारी हो तो मन अपने काम में स्थिर रहता है। यही बात कहानी बालक को सिखाती है–वह भग्नमनोरथ के बाद सोचता है कि अब मैं भी अपने उचित कर्तव्य (पाठशाला/पढ़ाई) में लगूँ, और तदनंतर वह विद्याव्यसनी बनकर बड़ी विद्वत्ता प्राप्त करता है।

उदाहरण 7. 'वित्त' शब्द से तसिल् प्रत्यय लगाकर पंचमी-अर्थ वाला रूप बनाइए।

› नियम याद करो: पंचमी-अर्थ में लगने वाले 'तसिल्' से 'तः' ही शेष रहता है।

› मूल शब्द: 'वित्त'।

› 'तसिल्' का शेष भाग 'तः' जोड़ो।

› अंतिम रूप बनाओ: 'वित्त' + 'तः' = 'वित्ततः'।

उत्तर – वित्ततः

उदाहरण 8. 'उप' उपसर्ग को 'हृ' धातु के साथ जोड़कर बनने वाले रूप और अर्थ लिखो।

› पहचानो: 'उप' क्रिया के पूर्व जुड़ने वाला शब्द है, इसलिए यह उपसर्ग है।

› अगला कदम: उपसर्ग को धातु 'हृ' के पहले योग करो–'उप + हृ'।

› रूप बनता है: 'उपहरति'।

› अर्थ लिखो: 'भेंट देन' यानी किसी को भेंट देना।

उत्तर – 'उप' + 'हृ' = 'उपहरति' ; अर्थ: 'भेंट देना'।

उदाहरण 9. पुरुषवाचक शब्द 'गुरु' का स्त्रीलिङ्ग रूप बनाइए।

› देखो: स्त्रीलिङ्ग में बदलने के लिए स्त्री प्रत्यय लगाते हैं।

› मुख्य प्रत्यय पाठ के अनुसार: टाप् और घीप्।

› उदाहरण याद करो: "गुरु $ घीप्" यानी गुरु से स्त्री बनाने में घीप् आता है।

› घीप् लगाओ: गुरु + घीप् गुर्वी.

उत्तर – 'गुरु' का स्त्रीलिङ्ग रूप 'गुर्वी' है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- उत्तर लिखते समय 'संगति से दोषगुण' और 'दुष्ट-सज्जन मित्रता का अलग असर' अवश्य लिखो।
- NCERT में दिए दोनों सूत्र याद रखो–पहला दुष्ट, दूसरा सज्जन; उत्तर में समय के प्रभाव का कारण लिखो।
- घटना-क्रम लिखो: रुचि साथी तन्द्रा/भ्रमण कालान्तरे बोध
- कारण-परक निष्कर्ष में 'क्यों' (कारण) और 'क्या बदल गया' (बोध/निर्णय) ज़रूर लिखो।
- उत्तर लिखते समय 'कारण + सीख' जरूर लिखना–सिर्फ घटना नहीं।
- उत्तर में मधुकर के दोनों वाक्य ("व्यग्राय्", "भ्रष्टव्यम्...") जरूर लिखो और अंत में नैतिक निष्कर्ष जोड़ो।
- उत्तर लिखते समय '...तसिल्' नहीं, सिर्फ '...तः' लिखो।
- उत्तर लिखते समय 'उपसर्ग + धातु' और उसका अर्थ अवश्य लिखो।
- NCERT/परीक्षा में प्रत्यय-आधारित रूपान्तरण सीधे पूछे जाते हैं–टाप्/घीप् पैटर्न याद रखो।

एक नज़र में रिवीज़न

› - संगति दोष/गुण; मित्रता छाया जैसा असर
› - दुष्ट: भारी फिर घटे; सज्जन: हल्की फिर बढ़े।
› - क्रीड़ा+तन्द्रा अकेलापन "रिक्तः" सोचकर भटकना
› - कारण लिखो: तन्द्रा/एकाकीपन भ्रम बोध पाठशाला वापसी
› - मधुकर: मधु-संग्रह, चटक: लोभ से न टलना, श्वान: रक्षा-कर्तव्य
› - मधुसंग्रहव्यग्र + रक्षा-कर्तव्य = विचलन नहीं
› तसिल् तः शेष; "...तः" रूप बनाओ।
› - उपसर्ग = धातु के पूर्व; योग से रूप- अर्थ बदलता है
› - बालबाला (टाप्), लघुलघ्वी (घीप्), गुरुगुर्वी (घीप्)